Economics D.I (Hons)

Dr. Vinod Baitha
Deptt. of Economics
Marwari college Darbhanga

तटस्थता वक्र विश्लेषण

INDIFFERENCE CURVE ANALSIS

तटस्थता वक्र विश्लेषण मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण में निहित मान्यताओं अस्वीकार करते हुए हिक्स एवं ऐलेन (Hicks and Allen) अर्थशास्त्रियों ने एक वैकल्पिक विचारधारा प्रस्तुत की जिसे उदासिनता वक्र विश्लेषण कहा जाता है। प्रो० मार्शल ने उपयोगिता को मुद्रा रूपी माप दण्ड से मापा है इसलिए मार्शल के विचार को गुणवाचक कहते हैं। मार्शल के अनुसार " किसी वस्तु की इकाई के उपयोग से वंचित रहने की अपेक्षा, उस वस्तु की इकाई के लिए जितना मूल्य देने की तत्परता रहती है वही वस्तु से प्राप्त होने वाली उपयोगिता का मौद्रिक माप है। मार्शल के अनुसार जो व्यक्ति जिस वस्तु के उपभोग के जितनी अधिक मुद्रा देना चाहता है उसे उस वस्तु से उतनी ही उपयोगिता मिलती है मार्शल ने उपयोगिता को मापनीय बताया लेकिन अन्य अर्थशास्त्रियों द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। और उदासिनता वक्र का विश्लेषण अपने ढंग से प्रस्तुत की। इस विश्लेषण के अनुसार उपभोक्ता वस्तुओं की खरीदते समय केवल प्राथमिकता क्रम Scale of Preference को ध्यान में रखता है। उपभोक्ता के लिए वस्तु संयोग अधिक महत्व का होता है। अतः उपभोक्ता उस संयोग को ऊँचा क्रम देता है जो इसके लिए अधिक महत्व का होता है और जो कम महत्व का संयोग होता है उसे नीचा क्रम प्रदान करता है। इस प्रकार वह वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को उनसे प्राप्त संतुष्टि के आधार पर क्रमवाचक संख्याएँ ordinal Numbers अर्थात प्रथम, द्वितीय, तृतीय चतुर्थ --- आदि प्रदान करता है।

उदासीनता वक्र विश्लेषण की विचारधारा का प्रारंभ 1881 में अंग्रेज अर्थशास्त्री एजवर्थ Edgeworth ने किया था। बाद में 1906 में इटेलियन अर्थशास्त्री पैरेटो Pareto ने एजवर्थ की नीति को अपनाया। इसके आधार पर उन्होंने मांग की विवेचना की। पैरेटो ही एक ऐसा अर्थशास्त्री था। जिसने सर्व प्रथम यह स्पष्ट किया की उपयोगिता एक मानसिक तत्व है। जिसे केवल वस्तु का उपभोग करनेवाला व्यक्ति ही महसूस कर सकता है। यह हमेशा स्थिर भी नहीं रहती, परिणामस्वरूप इसका संख्यात्मक माप भी नहीं हो सकता है।

1915 में एक रूसी अर्थशास्त्री स्लटस्की Slutsky ने पैरेटो की इस विधि की व्याख्या की थी। परन्तु रूसी भाषा में होने तथा प्रथम विश्वयुद्ध के

Scanned by CamScanner

उथल-पुथल के कारण उस धारणा को विशेष महत्व नहीं मिला और लोग उसे जल्दी ही भूल गए। 1939 में प्रो० हिक्स Hicks ने स्वयं अपनी पुस्तक Value and capital में तटस्थता विश्लेषण की विचार से आरम्भ की।

इस प्रकार तटस्थता वक्र विश्लेषण की परिभाषा, विभिन्न अर्थशास्त्रियों ने अपने-अपने शब्दों में प्रस्तुत की है कुछ अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं निम्न हैं।

1. जे. के. ईस्थम J. K. Eastham के अनुसार "यह वस्तुओं के मात्राओं के उन संयोगों का बिन्दु पथ है जिसके बीच व्यक्ति तटस्थ (उदासीन) रहता है और इस लिए इसे तटस्थता वक्र कहते हैं।"

2. अर्थशास्त्री के. ई. बोल्डिंग K. E. Boulding के अनुसार "समान अनुराग दिखाने वाली वक्र रेखाएं तटस्थ वक्र कहलाती हैं क्योंकि ये वस्तुओं के ऐसे संयोग को व्यक्त करती हैं जो एक दूसरे से न तो अच्छे होते हैं और नहीं बुरे"

3. अर्थशास्त्री ए. एल. मेयर्स (A. L. Mayers) के अनुसार "अधिमान सारणी वह तालिका है जो वस्तु... के ऐसे विभिन्न संयोगों को बताती है जिनसे किसी व्यक्ति को समान संतोष प्राप्त होता है। यदि हम इसे एक वक्र के रूप में प्रदर्शित करें हमें अधिमान वक्र प्राप्त हो जाएगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अनेक अर्थशास्त्रियों ने उदासीनता वक्र की परिभाषा अपने-अपने ढंग से दिए हैं।

उदासीनता वक्र विश्लेषण कि अनेक मान्यताएँ हैं इन्हीं मान्यताओं पर उदासीनता वक्र विश्लेषण निर्भर करता है तटस्थता वक्र विश्लेषण की मान्यताएँ निम्नलिखित हैं।

1. उपभोक्ता का विवेकपूर्ण व्यवहार — इस विश्लेषण की पहली मान्यता यह है कि उपभोग करते समय उपभोक्ता विवेकपूर्ण व्यवहार करता है। सचमुच में ही अधिकतम संतुष्टि मिलना तभी सम्भव है जबकि उपभोक्ता सोच-समझ कर कम उपयोगी वस्तुओं के स्थान पर अधिक उपयोगी वस्तुओं पर व्यय करे।

2. क्रमवाचक दृष्टिकोण — यह विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता उपभोग संयोग से प्राप्त संतुष्टि को एक वरीयता क्रम प्रदान करता है क्योंकि संतुष्टि एक मनोवैज्ञानिक विचार है जिसे संख्यात्मक रूप में मापा नहीं जा सकता है।

3. विभाजित एवं समरूप वस्तुएँ — उदासीन वक्र विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता जिन वस्तुओं का उपभोग कर रहा है ऐसी वस्तुएँ हैं जिनको छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँटा जा सकता है।

Scanned by CamScanner

4. दुर्बल क्रमबद्धता — उदासीनता वक्र विश्लेषण दुर्बल क्रमबद्धता की मान्यता पर आधारित है यह मान्यता स्पष्ट करती है कि उपभोक्ता दो संयोगों के मध्य उदासीन हो सकता है। किन्तु प्राप्त संयोगों में से एक संयोग को अन्य की तुलना में नहीं चुन सकता।

5. सकर्मकता — उदासीन वक्र विश्लेषण में इस मान्यता का अर्थ है कि एक उपभोक्ता के लिए A की अपेक्षा B संयोग अधिक संतुष्टिदायक है और B की तुलना में वह C संयोग से अधिक संतुष्टि प्राप्त करता है। तो C संयोग का निश्चित ही A संयोग से अधिक होगा अर्थात B>A और C>B तो B>A होगा।

6. चुनाव में संगति — तटस्थता वक्र विश्लेषण उपभोक्ता के व्यवहार में संगति मानकर चलता है इसका अर्थ यह हुआ कि यदि वस्तुओं के A संयोग का संतोष B संयोग की अपेक्षा आज अधिक है तो वह कल भी रहेगा। दूसरे शब्दों में संतोष की दृष्टि से A हमेशा B से अधिक रहेगा। B कभी A से अधिक नहीं होगा अर्थात् A>B : B<A।

7. घटती सीमान्त प्रतिस्थापन दर — तटस्थता वक्र विश्लेषण यह मानकर चलता है कि जब एक उपभोक्ता किसी एक वस्तु (जैसे Y) के लिए दूसरी वस्तु जैसे (X) की मात्रा प्रतिस्थापित करता जाता है वैसे-वैसे वह X के लिए Y के पहले कम मात्रा छोड़ने के लिए तैयार रहता है।

तटस्थता तालिका का निर्माण वस्तुओं के अनेक संयोग से होता है तालिका में निहित संयोग में चुनाव करने के प्रति उपभोक्ता हमेशा ही उदासीन रहता है क्योंकि प्रत्येक संयोग से मिलने वाली उपयोगिता समान महत्व की होती है अर्थशास्त्री मेयर्स के शब्दों में तटस्थता तालिका दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोग की सूची होती है जो किसी उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि देते हैं।
प्रो० हिक्स ने भी इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि उपभोक्ता की माँग स्थिर रहती है तथा उपभोग की जा रही वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन नहीं हो पा रहा है तो एक वस्तु का उपभोग बढ़ाने के लिए उपभोक्ता को दूसरी वस्तु के उपभोग को त्यागना पड़ेगा यह तालिका द्वारा दिखाया जा रहा है।

तटस्थता तालिका

संयोग	X वस्तु की मात्रा	Y वस्तु की मात्रा	सीमान्त प्रतिस्थापन दर
A	1	15	
B	2	10	5:1
C	3	06	4:1
D	4	03	3:1

Scanned by CamScanner

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि पहले संयोग A में उपभोक्ता X वस्तु की 1 इकाई तथा Y वस्तु की 15 इकाईयाँ उपभोग कर रहा है अब यदि उपभोक्ता X वस्तु की मात्रा को बढ़ाना चाहता है तब कुल संतुष्टि को पूर्ववत् बनाए रखने के लिए Y वस्तु की कुछ इकाईयाँ त्यागनी पड़ेगी तालिका से स्पष्ट है कि उपभोक्ता जैसे-जैसे X वस्तु की अतिरिक्त इकाईयाँ उपभोग में बढ़ाता जाता है वह घटते क्रम में Y वस्तु की इकाईयों का परित्याग करने को तैयार होता है। तालिका में प्रदर्शित सभी संयोग A.B.C.तथा D उपभोक्ता को एक समान संतुष्टि देते हैं।

तटस्थता वक्र अथवा उदासीन वक्र

उदासीन वक्र वस्तुओं के मात्राओं के संयोगों का बिन्दुपथ है। जिनसे एक समान संतुष्टि प्राप्त होने के कारण उपभोक्ता उनके बीच उदासीन रहता है इसलिए तटस्थता तालिका में प्रदर्शित विभिन्न संयोगों में X व Y के मात्राओं को ग्राफ पेपर के आधार पर अंकित कर के एक तटस्थता वक्र बनाया जा सकता है। तालिका 1 के आधार पर चित्र 1 को बनाया गया है। चित्र में X (axis) पर X वस्तु की तथा Y (axis) पर वस्तु की मात्रा को दिखाया गया है IC वक्र इन दोनों वस्तुओं के विभिन्न संयोगों को दिखाने वाला तटस्थता वक्र है जिनसे उपभोक्ता को समान उपयोगिता प्राप्त होती है इसी कारण इस वक्र को समान उपयोगिता वक्र भी कहा जाता है इन वस्तुओं को इस वक्र में दिखाए गए संयोग A, B. C तथा D बिन्दुओं द्वारा प्रकट किये गए हैं। इनमें X तथा Y वस्तुओं की मात्राएँ क्रमशः (1X+15Y),(2X+10Y).(3X+6Y) तथा (4X+3Y) हैं जो उदासीनता अथवा तटस्थता वक्र को प्रदर्शित कर रहे हैं

Scanned by CamScanner